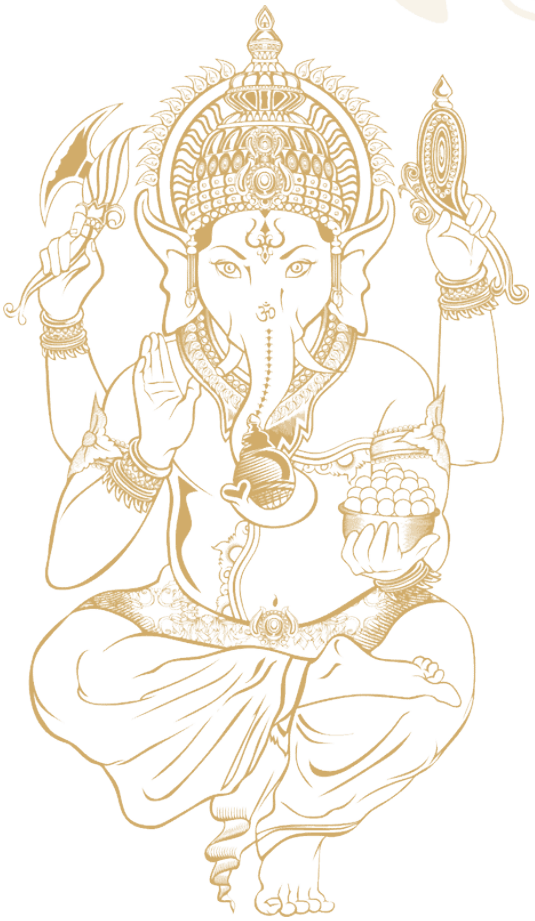

Mr.Abc

30 Aug 2025

10:24 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119285301**

तिथि 30/08/2025 **समय** 10:24:00 **वार** शनिवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:00
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:37:26 घं
वेलान्तर	00:00:38 घं
सूर्योदय	05:58:12 घं
सूर्यास्त	18:44:40 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
तिथि	7
नक्षत्र	विशाखा
योग	ऐन्द्र
करण	वणिज

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	तो-तोरल
पाया(रा.-न.)	रजत-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

गुरु 2वर्ष 6मा 2दि

गुरु

30/08/2025
02/03/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	30/08/2025
मंगल	08/10/2025
राहु	02/03/2028

योगिनी

धान्या 0वर्ष 5मा 19दि

धान्या

30/08/2025
18/02/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	30/08/2025
संकटा	18/11/2025
मंगला	19/12/2025
पिंगला	18/02/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			10:10:08	तुला	स्वाति	2	राहु	गुरु	---	0:00			
सूर्य			12:52:36	सिंह	मघा	4	केतु	बुध	मूलत्रिकोण	1.88	मातृ	पितृ	क्षेम
चंद्र			01:14:40	वृश्चि	विशाखा	4	गुरु	मंगल	नीच राशि	1.22	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			20:31:56	कन्या	हस्त	4	चंद्र	शुक्र	शत्रु राशि	0.95	भातृ	भातृ	वध
बुध			29:31:07	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.98	आत्मा	ज्ञाति	विपत
गुरु			23:19:51	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.23	अमात्य	धन	जन्म
शुक्र			11:11:16	कर्क	पुष्य	3	शनि	चंद्र	शत्रु राशि	1.30	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		05:55:48	मीन	उ०भाद्रपद	1	शनि	बुध	सम राशि	1.12	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु			24:10:38	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	बुध	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु			24:10:38	सिंह	पू०फाल्गुनी	4	शुक्र	बुध	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

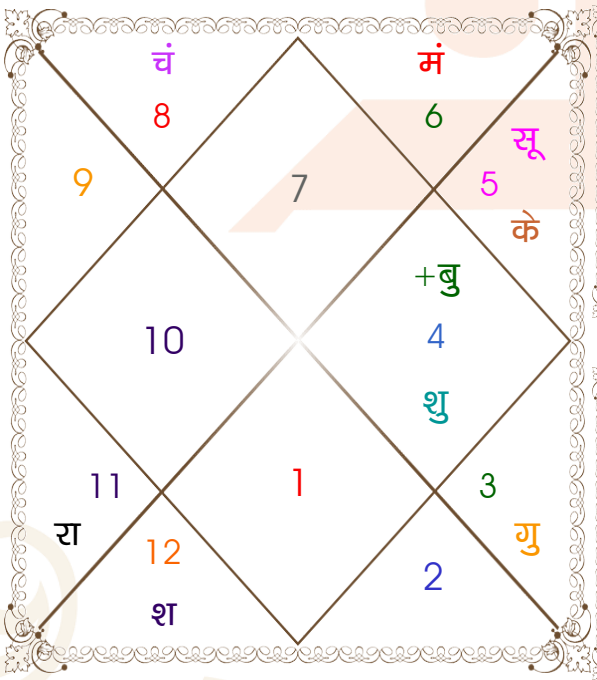

चन्द्र कुंडली

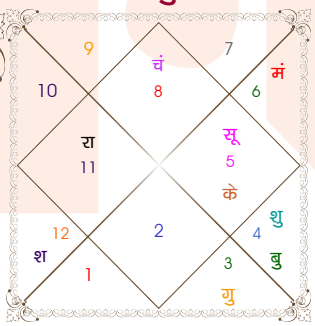

नवमांश कुंडली

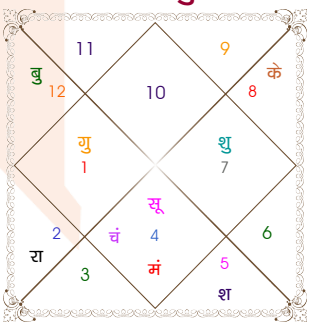

सर्वाष्टकवर्ग

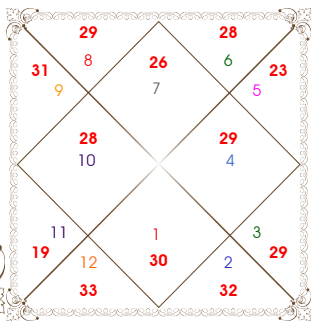

दशमांश कुंडली

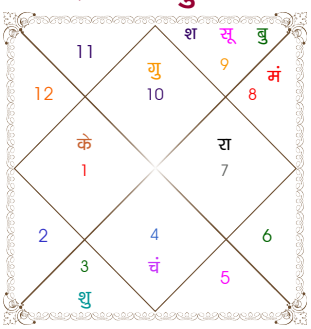

Star Jyotish Kendra (Astro.Shailu)
Hanumaan chowk, Hanuman Mandir inside Sonika jewllers Satna (M.P.)
78369 55710
shailu.sikdar1990@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण ब्राहमण, गण राक्षस, नाड़ी अन्त्य, योनि व्याघ्र तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के अनुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "तो" अक्षर से होगा। यथा- तोता राम

आप हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहेंगे तथा अधिकांश सांसारिक कार्यों को उसी की आज्ञा तथा निर्देशों से सम्पन्न करेंगे। आप स्वतंत्रता पूर्वक किसी भी सांसारिक कार्य को सम्पन्न करने के लिए निर्णय लेने में सदा असमर्थ रहेंगे। बिना पत्नी की सलाह लिए कुछ भी नहीं करेंगे। आपकी प्रवृति अभिमानी भी होगी तथा समाज में अपनी इस प्रवृति का कभी कभी प्रदर्शन करते रहेंगे। आपके शत्रु हमेशा आपसे पराजित रहेंगे तथा आपका सामना करने की उनमें हिम्मत नहीं रहेगी। इसके अतिरिक्त आप में क्रोधाधिकता भी रहेगी तथा समय समय में इसका प्रदर्शन भी करते रहेंगे।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आपके ह्दय में अन्य लोगों के प्रति कभी कभी बिना किसी कारण के ईर्ष्या की भावना रहेगी। किसी व्यक्ति कि अचानक उपलब्धि तथा सफलता प्राप्त करने पर आप उसके प्रति अधिक ईर्ष्यालु हो जाएंगे। साथ ही आप लोलुप भी होंगे तथा अनावश्यक लोलुपता के कारण समाज में अपना मान सम्मान एवं आदर की न्यूनता करेंगे। लेकिन आपका शरीर कान्तिमय रहेगा। अपने विचारों को स्पष्ट करने में आप अति चतुर होंगे तथा इसी वाक्यटुता के कारण आप जीवन में अधिकांश रूप से सफलताएं अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अन्य लोगों से समय समय पर आपका विवाद होता रहेगा।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आपके मन में धार्मिकता की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा देवताओं के प्रसन्न करने के लिए नित्य हवनादि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही आपकी मित्रता का क्षेत्र भी सीमित रहेगी। अतः आपके वास्तविक मित्रों की संख्या अल्प रहेगी।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।

यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपका हृदय में दया एवं करूणा के भाव की अल्पता रहेगी। साथ ही दीन दुःखियों के प्रति भी आपके मन में सहानुभूति या करूणा का भाव न्यून ही रहेगा। इसके अतिरिक्त समाज में अन्य जनों से भी आपके मित्रता पूर्ण संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका वक्ष स्थल विशाल होगा तथा आखें भी बड़ी बड़ी होगी। आपके शरीर का सामान्य वर्ण तनिक श्यामलता से युक्त होगा तथा हाथ एवं पैर में मत्स्य का निशान भी हो सकता हैं। आपके हाथ की रेखाएं भी बज्र तथा पक्षी के आकार की होंगी। माता पिता तथा गुरूजनों से आपके संबंध अल्प ही होंगे। बाल्यावस्था में आप काफी मात्रा में बीमार भी रहेंगे। अपने ज्ञान तथा बुद्धि के बल पर आप राज्य से किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को भी सुशोभित कर सकेंगे। साथ ही आपके कार्य भी काफी कठोर रहेंगे। अतः पुलिस, सेना या सर्जरी आदि विभागों में कार्य कर सकते हैं। आप क्रूरकर्मों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्पन्न करने वाले व्यक्ति भी होंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।

जनकगुरुवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः कूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदर तथा मस्तक विस्तृत रहेगा तथा प्रवृति में लोलुपता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा तथा अन्य लोगों की वस्तुओं को देखकर आप में इस भावना का प्रादुभाव होगा। धर्म तथा ईश्वर की सत्ता में समयानुसार आप श्रद्धा प्रदर्शित करते रहेंगे। आपकी दाढी तथा नाखूनों में चोट का निशान भी रहेगा। आपकी आखें अत्यन्त ही सुन्दर होंगी। आप धनधान्य तथा ऐश्वर्य एवं वैभव से सारे जीवन में सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप कोई न कोई कार्य हमेशा करते रहेंगे क्योंकि निष्क्रिय होकर चुपचाप नहीं बैठने वाले होंगे। साथ ही कार्यों को करने में भी आप हमेशा दक्षता का प्रदर्शन करेंगे। बन्धुवर्ग से आपके सामान्य संबंध रहेंगे। कभी कभी आप में प्रचण्डता का भाव भी उत्पन्न होगा जो क्रोधाधिक्य के कारण होगा। आप अत्यन्त ही प्रतापी एवं पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सभी सामाजिक लोग आपकी प्रभुता को स्वीकार करेंगे तथा पूर्ण मान सम्मान प्रदान करेंगे। इसके साथ सरकार से किसी कानूनी मुकदमे में आप को जीवन में आर्थिक हानि भी हो सकती हैं।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः कूरचेष्टः।
चौरो बालो रुगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप एक धनाढ्य पुरूष होंगे तथा बहुत से पारिवारिक या अन्य जनों का आपके द्वारा पालन किया जाएगा। स्त्रियों के विषय में आप एक सौभाग्यशाली पुरूष होंगे तथा उनसे पूर्ण सम्मान, सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। आप में मनुष्यता के सम्पूर्ण गुण विद्यमान रहेंगे। आप राज-सेवा में भी तत्पर रहेंगे। आपके मन में दूसरे के धन को प्राप्त करने की हमेशा प्रबल इच्छा रहेंगी। साथ ही किसी न किसी उद्यम को करने में आप हमेशा तत्पर रहेंगे। आप दृढ़मति के व्यक्ति होंगे तथा जिस के विषय में एक बार आप सोच लेंगे उसे पूर्ण करके ही रहेंगे। इसके साथ ही आप एक साहसी तथा शूरवीर पुरूष भी होंगे तथा साहस पूर्वक अपने समस्त कार्यकलापों कों सम्पन्न करेंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

आपकी प्रवृति जुआ आदि खेलने की भी रहेगी फलतः इसके द्वारा भी आपको कई बार आर्थिक हानि उठानी पड़ेगी। आप का स्वभाव अन्य लोगों से यदा कदा विवाद वाला भी

रहेगा। साथ ही शान्ति का आभास भी आपको कभी कभी ही होगा।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बाल्यावस्था से ही भ्रमण प्रिय होंगे तथा इधर उधर भ्रमण तथा यात्रा करने की आपके मन में प्रबल इच्छा विद्यमान रहेगी। आप स्वभाव से ही अभिमानी प्रवृति के होंगे तथा छोटी छोटी बातों तथा वस्तुओं पर समय समय पर इसका अन्य लोगों के समक्ष प्रदर्शन करेंगे। स्वजनों के प्रति भी आपके हृदय में कठोरता का भाव रहेगा तथा उनके प्रति आपके मन में सहानुभूति की भावना अल्प मात्रा में ही रहेगी। आप अपने साहस पूर्ण कार्यों के द्वारा धनार्जन करने में पूर्ण रूपेण सफल रहेंगे।

बालप्रवासी कूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आप कभी कभी अधिक बोलने वाले व्यक्ति होंगे। आप का हृदय कठोरता से युक्त रहेगा तथा दया एवं करूणा की इसमें न्यूनता रहेगी। आप छोटी छोटी बातों में शीघ्र ही क्रोधित होने वाले होंगे। आप एक साहसी पुरूष होंगे तथा समस्त कार्यों को साहसपूर्वक सम्पन्न करेंगे। साथ ही साहसिक कार्यों को करने के लिए आप तत्पर रहेंगे।

आप जीवन में कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित रह सकते हैं। साथ ही आपकी आकृति भी सामान्यतया सुन्दर ही होगी। कभी कभी आप अत्यन्त कटु एवं कठोर वाणी को भी बोलने वाले होंगे जिससे अन्य लोग आपसे प्रसन्न नहीं रहेंगे। अतः यत्नपूर्वक आपको अपने वार्तालाप में मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में जन्म होने के कारण आपकी प्रवृति स्वछन्द रहेगी तथा स्वछन्दता पूर्वक ही कार्य करने में आप तत्पर रहेंगे बाहरी हस्तक्षेप या दवाब आपको पसन्द नहीं रहेगा। आप धनार्जन करने तथा उसे संग्रह करने में भी तत्पर रहेंगे। अच्छी बातों को भी आप शीघ्रतापूर्वक ग्रहण करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में पूर्व प्रशिक्षित होने के कारण सभी लोग आपकी

प्रभुता को स्वीकार करेंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपकी एक विशेष कमजोरी यह रहेगी कि आप स्वयं अपने मुख से अपनी ही प्रशंसा स्वयं करेंगे। जिससे आपके सामाजिक प्रभाव में न्यूनता स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होगी। आप सर्वप्रकार के वैभव तथा ऐश्वर्य से भी सुसम्पन्न रहेंगे।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम

रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा षष्ठी तथा एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा सर्वथा अनिष्ट फलदायक रहेगा। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यातिपात योग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर एवं वृष राशि में स्थित चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य तथा सुरक्षा का भी पूर्ण रूप से ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधाएं तथा अन्य शुभ कार्य सफल नही हो रहे हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव भगवान शिव की पूजा करनी चाहिए एवं नित्य प्रातः विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, गेहूं, मनका इत्यादि पदार्थो का भी श्रद्धापूर्वक किसी योग्य पात्र को दान करना चाहिए इससे आपकी मानसिक चिन्ताएं दूर होगी तथा अशुभ प्रभाव भी कम होंगे। इसके लिए आप सोमवार का उपवास भी कर सकते हैं। साथ मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।